अंतरा-शब्दशक्ति

कृपण दशा

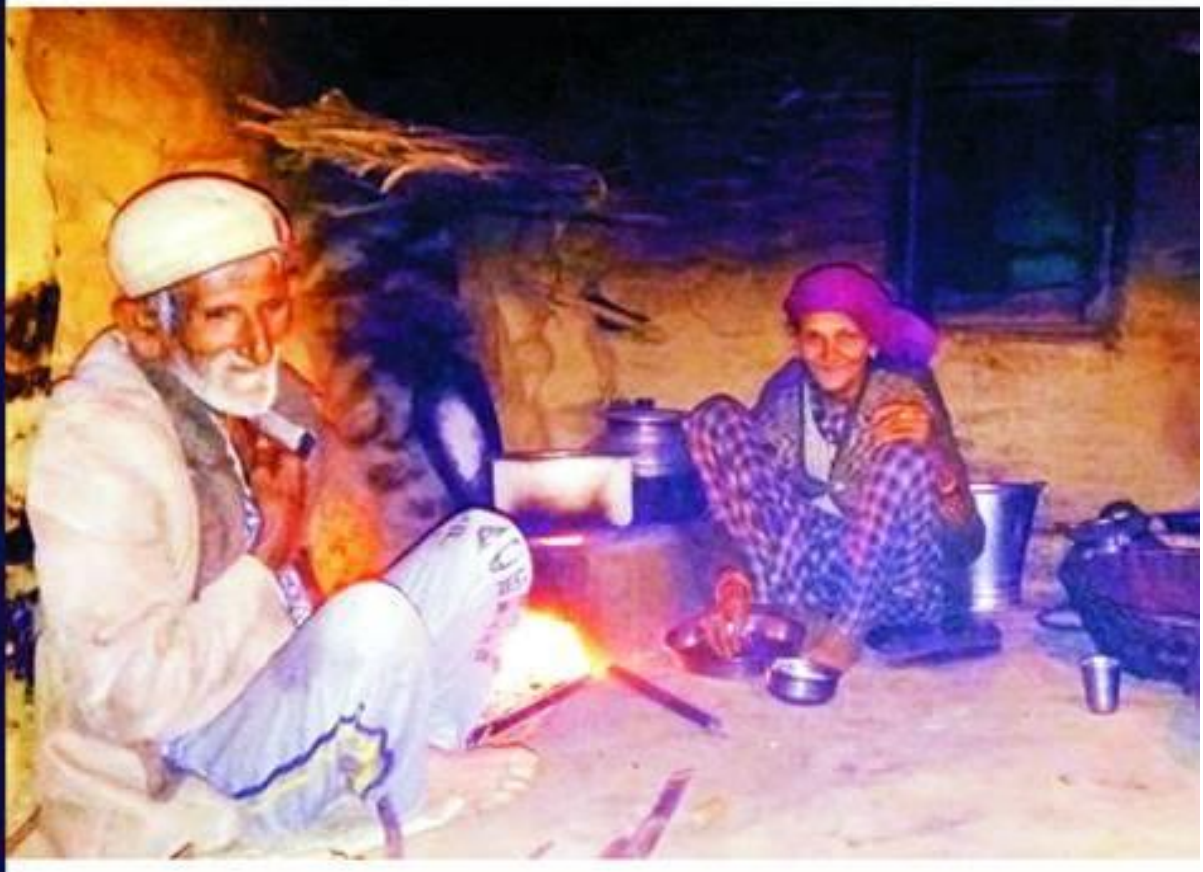

काव्य संग्रह

दिलीप वशिष्ठ

कृपण दशा

(काव्य संग्रह)

दिलीप वसिष्ठ

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-50-5

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- दिलीप वसिष्ठ

मूल्य- ४०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Kripan Dasha By Deelip Vashisht

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अपनी बात

आचार्य मम्मट ने काव्य प्रयोजन को परिभाषित करते हुए छः प्रयोजन बताये है-

काव्यं यशसेर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यःपरिनिवृतये कान्तासम्मित्तयोपदेशयुजे।।

अर्थात काव्य कर्म यश प्राप्ति धनप्राप्ति व्यवहार कुशलता के लिए अमंगल से मुक्ति के लिए शीघ्रता से दुविधा निवारण हेतु तथा पत्नी के समान विमर्श वाला होता है।।

इन सभी प्रयोजनों को ध्यान में रखते हुए साहित्य कर्म किया जाता है।

परन्तु स्वामी तुलसी दास ने इसे मात्र इतने में ही कह दिया था। स्वान्तः सुखाय जग हिताय च।

अर्थात वे आत्मिक सुख और संसार के कल्याण हेतु साहित्य रचना करते थे।।

मैं भी इसी प्रयोजन को यहां अभिहित कर रहा हूँ। परन्तु कुछ विशेष रचनाएँ किसी विशेष प्रयोजन से की जाती है।

प्रस्तुत कृपण दशा रचना में एक नवीनतम प्रयास किया गया है।। जो सम्भवतः अब तक के हिंदी साहित्य जगत की अभूतपूर्व रचना है। इस रचना में क से लेकर ज्ञ तक का अनुप्रास एक ही

रचना में वर्णमाला के क्रम को निरन्तर रखते हुए लिखा गया है।

नकार (न) के प्रयोग में एक वर्ण से बंध लिखने का प्रयास किया गया है।जिसमे अधिकतम सफल भी हुआ हूँ।।

हाँ यह अवश्य है कि इस बुद्धि विलास में कविता क्लिष्ट हो गयी है और सम्भवतः अलंकारों के अत्यधिक प्रयोग से अलंकार खचित नारि के समान कुछ भारकारी भी हो गयी है।

दूसरा यह कि इस रचना की आलोचना के भी अधिकतम अवसर है। परन्तु यह अवश्य कहना चाहूंगा कि उचित भाव सम्प्रेषण के लिए तत्सम शब्दावली का मोह नही त्याग पाया हूँ। और एक ही रचना में सम्पूर्ण वर्णावली को इस प्रकार से प्रयोग करने का व्यामोह भी।।

हिन्दी या संस्कृत वर्णमाला एक वैज्ञानिक उपचार भी है जिसकी उच्चारण स्थान व्यवस्था स्वयमेव ही अद्वितीय है।। अतः इस रचना को जोर जोर से पढ़ने पर यह toungh twister का काम करेगी जिससे उच्चारण क्षमता का विकास होगा।।

आगे की बात अनुबंध चतुष्टय में कह रहा हूँ।

अनुबंध चतुष्टय

अधिकारी

कुछ विषय विशेष ऐसे होते है जिनकी ग्राह्यता सभी के लिए सम्भव नही होती है।।

अधिकारी होने का सम्बन्ध यहां योग्यता से है। अतः इस पुस्तक में संकलित दोनों रचनाओं का अधिकारी वही पाठक है जो साहित्य सौंदर्य शास्त्र , भाषा सौष्ठव का ज्ञाता। भाषा विज्ञान का अध्येता व भाषा के मूल तत्वों का शोधकर्ता है तथा छंद और अलंकार शास्त्र का अध्येता या सर्जक हो। अन्यों के लिए ये रचनाएँ सम्भवतः उतना महत्व न रखें।

विषय

इस पुस्तक का विषय हिन्दी साहित्य की काव्य विधा है।

सम्बन्ध

इस पुस्तक का सम्बन्ध साहित्य-शास्त्र के अनुसार पदबंधों का छंद और अलंकार के अनुरूप विस्मयकारी शब्द रचना व नवोन्मेषशाली अर्थों का प्रतिपादन करने से है।।

प्रयोजन

इस पुस्तक का प्रयोजन भाषा के प्राचीनतम प्रयोग को उद्घाटित करना। भाषाविज्ञों के चित को आह्लादित करना तथा कृपण व हलधर की सम्वेदनाओं का तत्सम शब्दों से व्याख्यायित करना है।।

1. यहाँ तत्सम भी श्लेष अर्थ में हैं।।

2. तत्सम- अर्थात संस्कृत शब्दावली का तत्समरूप।

तत्सम:-जैसा भाव विन्यास है उसका सटीक अर्थ देने वाला शब्द।।।

आशा है आपको यह प्रयास सन्तुष्ट व प्रसन्न करेगा।।

आपका अपना

दिलीप वसिष्ठ

कृपण दशा

क. कौन करे कृपण की कदर,

ख. खाना खाने का ख्याल भी खाये,

ग. गीता ग्यान गंगा गये गड्ढे में

घ. घरघर (घर-घर) घिसटता घात खाये।।1।।

छन्दः- (.....त्रिष्टुप.....)

कृपणः- कृपा, पात्र, दयनीय, गरीब, निर्धन,

घरघरः- घिसटने की प्रक्रिया, बलात् प्रवृत होना

घर-घरः- प्रत्येक घर में श्रम हेतु या सहायता माँगने हेतु जाना।।

च. चारू चितवन की चाह किसे?

छ. छलती छद्म छवि छाया उसे

ज. जर-जोरू-जमीन की जुगत में,

झ. झंझा ने झुंझला- झुलसा उसे।। 2।।

छन्दः- (..... त्रिष्टुप.....)

चारूः- सुन्दर, प्यारा लगने वाला

चितवनः- कटाक्ष, कमनीय दृष्टि,

छद्म- छवि, छायाः- आभासी, आकृति रूप, कल्पनीय स्थिति,

जुगतः- युक्ति, कौशल

झंझाः- हवा के साथ तेज वर्षा,

अर्थात्

अभाव के साथ दुःखों का आगमन।

ट. टकटकी टिकाये टटोले स्वपन को,

ठ. ठहरे, ठिठके, ठेले, ठगे जीवन को,

ड. डगर-डगर डबडबाये नैन को,

ढ. ढुलकाये, ढूँढता, ढाँढस निर्जन में।। 3।।

ठहरे:- हर नयी स्थिति में स्तब्ध हो ठहर जाता है।
ठिठकेः- सावधानी पूर्वक जाँचता है।
ठेलेः- फिर से आगे बढना।

त. तुरग-तोरण-तख्तो ताज न चाहे,

थ. थोथा, थका, थाह, न जीवन पाये।

द. दान दाता दौलत से दूर-दूर,

ध. धधका धक्काता निज धाम धाये।। 4।।

छन्दः- (भूरिक जगती)
तुरग = घोड़ा (सवारी के लिये)
तोरण = वन्दन द्वार
थोथा = खाली- खाली
थाह = सार (गहरायी)
धाम = घर

न.

नानानन ननुनचे नानानाच नुनचावे
नग्नाङ्गानंगनुनही
नान्ननानन्दनापनापन पावे।। (बृहती)।। 5।।

नाना$आनन =कई प्रकार के मुख

(लोगो की कई तरह की बाते)

ननुनचे = मीन मेख निकालना (आलोचना)

नाना नाच = कई प्रकार की गतिविधियाँ

(लोग उनसे करवाते हैं)

नु = निश्चित रूप से

नग्नांगानंगनुनही

नग्न + अंग +अनंग $नु$नही

अनंग = कामदेव

(नग्न अंग रहता है, परन्तु अनंग (कामदेव) नही है)

नान्ननानन्दनापनापन
न+अन्न+न+आनन्द+न+अपनापन

प. पापी पामर पातकी पद पाता
फ. फले फूले फिक्र भी फाँस फँसाता
ब. बाबा बाबू के बवंडर में बँटा
भ. भूखा भभकता भोजन न पाता।।
(जगती)।।6।।

पामर:- अपमान सूचक
पातकी:- निकृष्ट कार्य करने वाला
पद:- नाम (सम्बोधन)
बाबा-बाबू का बवंडर
ढोंगी (साधू) वेशधारी और कार्यालयों के लिपिकों के चक्कर में।।
भूखा- भभकता:- भूख की आग में जलता।।

म.

मर्शक मराल सा मृदुमन
मलिन सा मुख मर्रमर्राता
मुषित सा मुमुर्षु मुहूर्मुह
मर-मर के भी न मर पाता (त्रिष्टुप)।।7।।

मर्शक = सदैव चिन्ताग्रस्त

मराल = कोमल, हंस

मृदुमन = कोमल मन

मलिन = मैला, धूल भरा

मर्रमर्राता = कहराने की आवाज

मुषित = ठगा हुआ

मुमुर्षु = मरने की ईच्छा रखने वाला

मुहुर्मुह = बार- बार

य. यातना युक्त (यत्न) न फलता,

र. रटे राम ही रत्न न मिलता,

ल. लम्पटों की लोभ लीला ने लीSला

व. वराक् वक्रोक्ति वाक्यों ने छीला।।8।।

(त्रिष्टुप)

लम्पट = व्यभिचारि,

लीला = सम्मोहन का अभिनय

लीSला = निचोड़ना

वराक् = बेचारा (शरीफ)

वक्रोक्ति = व्यंग्यात्मक

श.

शीत भीत शतासन लगाये
शवासन श्वानासन लगाये
शयनातुर श्रान्त सा शरीर
श्रापित शारदीय गीत गाये।।9।।(त्रिष्टुप)

शतासन = सैकड़ो भंगिमायें व शरीर को सिकुड़ कर आकृति बनाना
शवासन = मृतदेह की भाँति लेटना।
श्वानासन= कुत्ते की भाँति देह लपेटकर सोना।
शयनातुर = सोने के लिये व्यग्र
श्रान्त = थका हुआ
शारदीय = शरद ऋतु का

ष.

षडरिपु षड़ऋतु संतापित
षडज ऋषभ न होते साधित
षड़यन्त्र सब फलित हो जाता
षकार सा दुःख मूर्धन्य हो जाता।।10।।

(स्वछन्द)

षडरिपु:- काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, ईर्ष्या।।

षडऋतु:- वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त शिशिर

संतापित:- प्रभावित प्रताड़ित

षड़ज:- संगीत स्वरमाला का पहला सुर (स)

ऋषभ:- संगीत स्वरमाला का दूसरा स्वर (रे)

न होते साधित:- अर्थात् रामात्मक वृत्तियों से लगाव नही हो पाना।।

ठण्ड के कारण स्वर कम्पन के कारण स्वर का ठहराव न होना संगीत शास्त्र मे इसे स्वर दोष कहा जाता है।।

षड़यन्त्र:-

क. जारण:- अर्थात् जलाना ऋण देकर उपकार करके या क्षणिक सहयोग के उपरान्त महाजनों द्वारा व्यंग्य सुनाकर जारण किया जाना।

ख. मारणः- कुछ लोग उपरोक्त स्थिति से भी आगे बढ़कर मारने का हिंसक प्रयास करते हैं।

ग. उच्चाटन- कुछ लोग स्वार्थवश भली-बुरी बातों से निर्धन लोगों का उच्चाटन करके उन्हे अपने स्वार्थ पूरे करने के लिये प्रवृत करते हैं।

घ. मोहन:- कुछ लोग धन-जन माँस-मदिरा आदि का लालच देकर निर्धनों को मोह लेने मे प्रवृत होते हैं, तथा उन्हें हित से हटाकर स्वयं के हितार्थ निर्धनों का प्रयोग करते हैं।

ङ. स्तंभन:- अर्थात् जड़ या स्थिर कर देना, समाज का सम्भ्रान्त वर्ग विवश जनों को स्वयं के स्वार्थपरक उपकारों से स्तंभित कर देते हैं, जिससे वह स्वयं के हितार्थ प्रवृत नहीं हो पाता है, और न ही स्वयं के अधिकार को जान पाता है।

च.विध्वंसन:- उपरोक्त पाँचों तत्वों की अधिकता से बहुत से लोग अपने जीवन से हाथ

धो बैठते हैं। अतः कृपण के लिये षड़यन्त्र भी सफल हो जाते है।

षकार :- हिन्दी वर्ण माला में व्यंजनों में 39 वाँ वर्ण अर्थात् ‘‘ष‘‘

षकार का ‘‘दुःख‘‘ मूर्धन्य:- संस्कृत व्याकरण व शिक्षा ग्रन्थों के अनुसार ‘‘षकार‘‘ का उच्चारण स्थान मूर्धा हैं। अत: इसे मूर्धन्य भी कहा जाता है।

‘‘ऋटुरषाणां मूर्धा‘‘

अतः निर्धनों के लिये दुःख ष वर्ण की भाँति मूर्धन्य हो जाता है।

स.

सकल समय संतप्त रहता

सावन सा मन तर सा रहता

सतरंग सत्संग सद्गति न पाता

हला!हल हलाहल ही पाता।। (भूरिक जगती)

।।11।।

सावन सा मन तरसा रहता की अनुवृत्ति में विरोधाभास है।परन्तु ‘‘तर ‘‘सा‘‘ की अनुवृत्ति में सावन की भाँति मन ‘‘तर‘‘ गीला रहता है।

हला!- सखि का सम्बोधन सूचक

हलः- साधन, छुटकारा, निर्णय, ऋणात्मक वृत्ति,

हलाहल:- विष

अर्थात् आत्महत्या को आतुर विषपान कर लेता है।

क्षोभ, क्षुरित, श्रापित, त्रिविध, ताप, त्रसित

ज्ञेय, ज्ञाता न ज्ञापित।।

क्षोभ:- हीनभावना का दुख, ग्लानि

क्षुरित:- छिला हुआ।

त्रिविध ताप:- आदिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक ताप

ज्ञेय- जानने योग्य

ज्ञाता- ज्ञानी

ज्ञापित- जाना हुआ, परिचित

“हलधर“

1.

हला! हल न निकला
हलाहल का कोई जो
तो हल यह निकाला
कि हर ही हल हलाहल का।।?।। !!बृहती!!

हलाहल = समुद्र मंथन से निकला हुआ विष
हल = समाधान
हर = महादेव, शिव

सागर मंथन से उत्पन्न हुये धधकते हलाहल को देव दानवों की विनती से शिव ने उसे अपने कण्ठ में धारण कर लिया था।

2.

यद्यपि नही निकला
हलधर की चिन्ता का
अब तक कोई हल
बेहल वे पी रहे है हलाहल।।बृहती।।

हलधरः- बलराम का एक नाम- यह अर्थ करने पर विरोधामास उत्पन्न होता है।

हलधरः- कृषक
बेहलः- बिना हल के (विरोधामास) अर्थात कृषक बिना हल के कैसे हो सकता है।
बेहलः- कृषकों की आर्थिक समस्याओं का समाधान न होने पर वे बेहल है।
अतः दयनीय स्थिति में कृषक हलाहल पी रहे हैं।

सागर मंथन से उत्पन्न हुये हलाहल का समाधान शिव ने किया था, मगर ये (कृषक) भी अपने जीवन को समाप्त करने हेतु हलाहल पी रहे हैं।

3.

उनके जीवन में है
जमा-गुणा-भाग सब
नही है, तो बस हल।। गायत्री।।

जमा = योग = दुःखों का योग होता रहता है।
गुणा = संकट कई गुणा बढ़ जाते हैं।
भाग = सुखों का भाग (बँटवारा) होता रहता है।
नही है तो हल:- अर्थात् संकटों और दुःखो का कोई समाधान नही है।

हल एक है वह भी ऋणात्मक
हल नही हो सकता धनात्मक
क्रिया के ही कृदन्त होने के लिये
या अन्त में हलन्त होने के लिये।। जगती।।

हल- गणित में ऋणात्मक ही होता है, क्योंकि हल ऋणात्मक ही होता है, अतः इस सन्दर्भ में कृषक का "हल" भी ऋण से ही ग्रसित हैं।

ऋणात्मक होने से हल धनात्मक अर्थात् ‘‘धन‘‘ को अर्जित करने में सक्षम नही हो पाता है।

कृदन्त = व्याकरण में क्रिया के

कृदन्त = कृत$अन्त अर्थात् की हुयी क्रिया का अन्त होना या

फलीभूत न होना।

कृदन्तः- संस्कृत वर्ण माला में ‘‘हल‘‘ का अर्थ व्यंजन वर्ण होता है, और बिना स्वर के जो व्यंजन वर्ण होता है उसे ‘‘हलन्त‘‘ कहा जाता है। जिसका की प्रक्रिया में लोप हो जाता है।

अतः कृषक भी अपने ही हल में अन्त हो जाता है।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - दिलीप वशिष्ठ

जन्म - 31 जुलाई 1983

लेखन - हिन्दी, संस्कृत व हिमाचली (पहाड़ी)।

पता - ग्राम घाटों पत्रालय बड़ग, तह.- संगडाह,
जिला- सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) 173023

मो. - 9805741711

प्रकाशन - अनन्त प्रेम की वैदिक प्रार्थनायें (काव्य संग्रह) आध्यात्म व दर्शन पर आधारित।
2. मेरा कर्म यहाँ लोक जीवन रचना है (काव्य संग्रह) लोक जीवन पर आधारित।
3. हिमाचली लोक भाषा के गीतों का लोक गायकों द्वारा गायन।
4. शक्ति-शालिनी माँ भंगायनी चालिसा की रचना।

पुस्तक के विषय में -

हिन्दी साहित्य के इतिहास में ऐसी प्रथम रचना 'कृपण दशा' जिसमें क से ज्ञ तक का अनुप्रास कमबद्ध उच्चारण व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था के अनुरुप लिखा गया है। रचना में त्रिष्टुप आदि वैदिक छन्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा सौष्ठव व साहित्य के शोधकर्ताओं के लिए एक रुचिकर रचना।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

मूल्य- 40/-